'कर्मभूमि' में प्रेमचंद ने किसान मजदूर के साथ-साथ अछूतोद्धार की समस्या को पहचानता दी है। किसान गाँव में जमींदारों के ~~खिलाफ~~ खिलाफ आन्दोलित हैं और मजदूर नगरनिगम के खिलाफ। किसान लगान माफी के लिए लड़ रहे हैं और मजदूर आवास की समस्या के समाधान के लिए। किसानों का नेतृत्व कर रहा है अमरकांत, यह सेठ समरकांत का बेटा है, गाँधीवादी है और शहरी मजदूरों की आवास समस्या की लड़ाई का नेतृत्व अमरकांत की बहन नयना और पत्नी सुखदा। अमरकांत के नेतृत्व में किसानों की लड़ाई छिन्न-भिन्न हो जाती है। किसान पुलिस जुल्म के शिकार होते हैं, उनपर हत्या के मुकदमे चलते हैं, लगानमाफी तो नहीं हो पाती ~~लेकिन~~ साथ ही फरारी की हालत में फसलें भी नहीं बो पाते। अब उनके सामने समस्या है लगान नहीं देने पर जमीन छिनने की। अमरकांत किसानों की लड़ाई के क्रम में ही जेल जाता है,

पिता समरकांत भी जेल जाते हैं। दोनों जेल से निकलते हैं गलबहियाँ डाले। नेतृत्व भी बना हुआ है और पिता-पुत्र का सनातन संबंध भी। अमरकांत ने किसान आन्दोलन को उस बिंदु पर पहुँचा दिया जहाँ पर किसान समरकांत से बगैर कर्ज लिए न तो लगान दे सकते थे और न ही जमीन बचा सकते थे। दूसरी तरफ नयना और सुखदा के नेतृत्व में मजदूर आन्दोलन सफल होता है। प्रेमचंद ने बताया कि निम्न मध्यवर्गीय पुरुष नेतृत्व के मुकाबले निम्नमध्यवर्गीय स्त्री का नेतृत्व कहीं ईमानदार है।